कारीगर हूँ साहब!

दलवंती सहरावत*

अनगढ़ हीरों को तराशा करता हूँ।
अंगूठी के साँचे में ढाला करता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

ख्वाहिश के मानकों से नौलखा हार बनाता हूँ।
इस तरह मिट्टी की मूरत का शृंगार बनाता हूँ।
कारीगर हूँ साहब...

मैं मीन को दरख्तों की सैर कराता हूँ।
कछुए को खरगोश से तेज दौड़ाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

पानी को मुट्ठी में बांधना सिखाता हूँ।
रेत से ब्रह्मांड की रचना कराता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

गीले पत्तों से आग जलाता हूँ।
बुझी राख से अंगार बनाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

नन्ही कलियों के सामने तमाशगर बनता हूँ।
तब जाकर उनके दिलों में घर करता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

हर रोज दीए की लौ-सा जलता हूँ।
तब टूटे दिलों पर मरहम मलता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

ख्वाबों की पोटली पीठ पर लिए फिरता हूँ।
सूनी आँखों के जरिए दिल में उतरता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

कभी मसीहा-ए-मददगार बनाता हूँ।
कभी ज्ञान का तलबगार बनाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

गुलाब की पंखुड़ियों से शमशीर-ए-धार बनाता हूँ।
लब्जों से सजाकर फिर गर्व-ए-भाल बनाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

**प्राथमिक शिक्षिका,* राजकीय कन्या प्राथमिक विद्यालय, भदानी, झज्जर 124 104 (राज्य शिक्षक पुरस्कृत)

लरजते होठों में तीर-ए-कमान थमाता हूँ।
काँपते हाथों से खुद की तकदीर लिखाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

कबाड़ से बीनकर साजो-सामान जुटाता हूँ।
मैं कुछ इस तरह नूर-ए-महल बनाता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...

सुबह से शाम यूँ गीली मिट्टी को गूँदा करता हूँ।
फिर तख्त-ए-ताज की सूरत में ढाला करता हूँ।।
कारीगर हूँ साहब...
हाँ, कारीगर हूँ साहब...